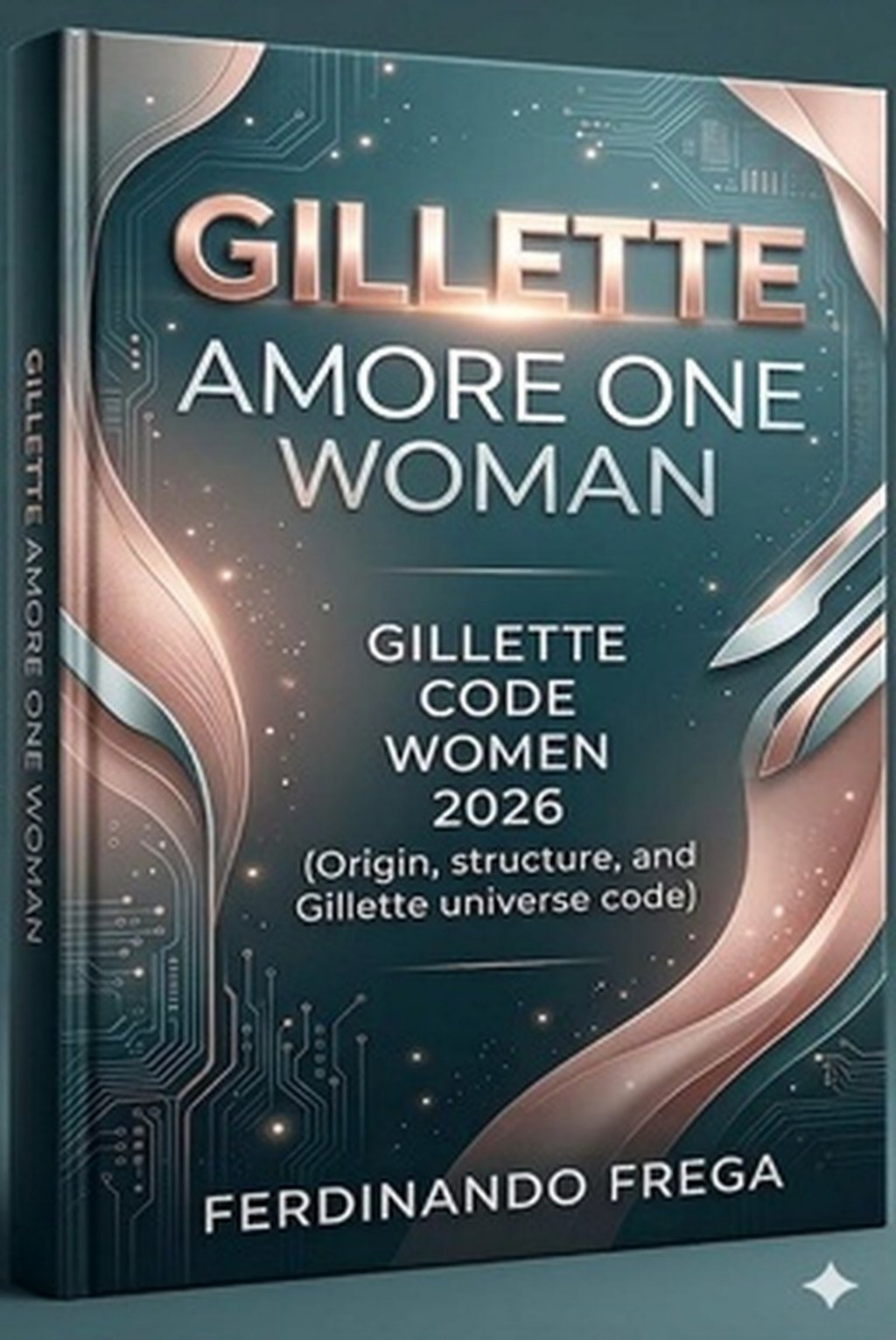

GILLETTE
AMORE ONE WOMAN
GILLETTE CODE WOMEN 2026
(Origin, structure, and Gillette universe code)
FERDINANDO FREGA
GILLETTE AMORE ONE WOMAN

GILLETTE कोड महिलाएँ 2026

एक संपादकीय घोषणापत्र और एक ऐसा क्रम जो स्वयं घोषणापत्र जैसा पढ़ा जाता है: उद्गम, मुलाक़ात, देरी, संवाद, जन्म। कोड को उस चीज़ के रूप में समझा गया है जो नियम बनने से बहुत पहले दो लोगों के बीच घटित होती है।

GILLETTE
AMORE ONE WOMAN

GILLETTE कोड महिलाएँ 2026

उद्गम, संरचना और Gillette ब्रह्मांड का कोड

FERDINANDO FREGA

Nando The Scribe

Gillette Narrative System
Gillette Woman Identity Division
2026

संपादकीय घोषणापत्र

यह पुस्तक एक आवश्यकता से जन्मी है:
स्त्री को अस्तित्व के एक अनिवार्य तत्व के रूप में
और नई Gillette पहचान की नींव के रूप में पहचानना।

एक भूमिका के रूप में नहीं।
एक कार्य के रूप में नहीं।
किसी सहायक आकृति के रूप में नहीं।

स्त्री संज्ञानात्मक उद्गम है, भावनात्मक जड़ है,
वह अदृश्य वास्तुकला जो हर जीवित चीज़ को थामे रखती है।

दशकों तक पुरुष कथा ने जगह घेरे रखी।
अब सच का समय है:
स्त्री व्युत्पत्ति नहीं है। वह संरचना है।

यह पुस्तक स्त्रियों का उत्सव नहीं मनाती।
यह उन्हें पहचानती है।
यह उन्हें उनके स्वाभाविक स्थान पर लौटाती है:
केंद्र में।

यह एक संपादकीय कार्य है, पर एक सांस्कृतिक कार्य भी।
पहचान की एक घोषणा।
एक आवश्यक दरार।

स्त्री ही कोड है।
स्त्री ही नक़्शा है।
स्त्री ही निरंतरता है।

और उसके बिना कुछ भी अस्तित्व में नहीं है।

संपादकीय टिप्पणी

यह खंड Gillette कथा-ब्रह्मांड में एक मोड़ है।
पुरुष पहचान, अनुशासन, स्मृति और रूपांतरण से गुज़रने के बाद,
यह पुस्तक सबसे विशाल और सबसे गहरा क्षेत्र खोलती है:
स्त्री, पूरी मानवीय व्यवस्था की भार-वाहक धुरी के रूप में।

यह उपन्यास नहीं है।
यह निबंध नहीं है।
यह गवाही नहीं है।

यह एक संस्थापक पाठ है।

हर पन्ना स्त्री को उसकी मूल केंद्रीयता लौटाने के लिए रचा गया है,
एक प्रतीकात्मक आकृति के रूप में नहीं, बल्कि एक संरचनात्मक सिद्धांत

के रूप में।

यह पुस्तक नई Gillette Woman पहचान का अभिन्न अंग है,
और उसका वैचारिक हृदय है।

समर्पण

उन सभी स्त्रियों को जिन्होंने कभी जगह नहीं माँगी,
बल्कि उसे रचा।

उन्हें जो मौन में बोलीं,
जिन्होंने बिना देखे गए प्रतिरोध किया,
जिन्होंने बिना नाम पाए निर्माण किया।

मेरी बेटी को,
जिसने मुझे सिखाया कि प्रेम की कोई आवाज़ नहीं होती,
बल्कि उपस्थिति होती है।

मेरी पत्नी को,
जिसने मुझे दिखाया कि शक्ति सत्ता नहीं है,
बल्कि प्रभाव है।

मेरी माँ को,
जो स्त्री होने से भी पहले उद्गम थीं।

पिछला आवरण

स्त्री कोई भूमिका नहीं है।
वह एक व्यवस्था है।

एक प्राचीन, सटीक, मौन व्यवस्था
जो हर अस्तित्वमान चीज़ को थामे रखती है।

यह पुस्तक स्त्री की कथा कहती है उद्गम के रूप में,
स्मृति के रूप में,

प्रतिरोध के रूप में,
विरासत के रूप में।

अंतरंग दृश्यों, पीढ़ियों के बीच के पड़ावों,
भाषा बन जाने वाले मौनों
और वास्तुकला बन जाने वाले इशारों के माध्यम से,
यह सबसे सच्चा और सबसे आवश्यक चित्र रचती है:
स्त्री, मानवीय पहचान की नींव के रूप में
और नई Gillette पहचान की नींव के रूप में।

एक पुस्तक जो समझाती नहीं।
प्रकट करती है।
एक पुस्तक जो उत्सव नहीं मनाती।
पहचानती है।

एक पुस्तक जो स्त्रियों के बारे में नहीं बोलती।
उनके साथ बोलती है।

प्रस्तावना

कुछ पुस्तकें कहने के लिए लिखी जाती हैं।
और कुछ लौटाने के लिए।

यह दूसरी श्रेणी की है।

वर्षों तक मैंने पुरुष कथा को पार किया,
अनुशासन, स्मृति, रूपांतरण।
पर हर मार्ग, हर पतन, हर पुनर्जन्म
का एक उद्गम था जिसे मैंने अभी तक नाम नहीं दिया था:
स्त्री।

आकृति के रूप में स्त्री नहीं।
बल्कि संरचना के रूप में स्त्री।

वह स्त्री जो जन्म देती है,
जो रक्षा करती है,
जो प्रतिरोध करती है,
जो परिभाषित करती है।

वह स्त्री जो मान्यता नहीं माँगती,
पर सदा उसकी हक़दार रही है।

यह पुस्तक आरंभ की ओर लौटने का मेरा तरीक़ा है।
जो अदृश्य रहा है उसे पहचानने का।
जिसने सदा सब कुछ थामे रखा उसे रूप देने का।

आधार

मैंने यह पुस्तक स्त्रियों को समझाने के लिए नहीं लिखी।
वह असंभव होता।
और दंभपूर्ण भी।

मैंने इसे उन्हें पहचानने के लिए लिखा।

क्योंकि हर कहानी जो मैंने जी,
हर पहचान जो मैंने गढ़ी,
हर अनुशासन जो मैंने सीखा,
उसका उद्गम एक स्त्री थी।

स्त्री कोई रहस्य नहीं जिसे सुलझाया जाए।
वह एक उपस्थिति है जिसका स्वागत किया जाए।

यह पुस्तक यह कहने का दावा नहीं करती कि स्त्री क्या है।
यह कहने का दावा करती है कि वह क्या दर्शाती है:
सब कुछ।

सारांश

एक पुरुष अपने ही जीवन से होकर यात्रा करता है और पाता है कि हर पड़ाव,
हर मोड़, हर घाव और हर पुनर्जन्म
की एक ही जड़ है: स्त्री।

माँ से पत्नी तक,
बेटी से मौसी तक,
मिली हुई स्त्रियों से कल्पित स्त्रियों तक,
हर आकृति एक दहलीज़ बन जाती है,
एक सबक,
एक रहस्योद्घाटन।

पुस्तक स्त्री की कथा कहती है मानवीय पहचान की नींव के रूप में।
और नई Gillette पहचान के एक अनिवार्य तत्व के रूप में।

एक कथात्मक यात्रा जो स्मृति, जीवनी,
आदिरूप और संरचना को जोड़ती है,
ताकि स्त्री को वह स्थान लौटाया जा सके जो उसका है:
केंद्र में।

लेखक की टिप्पणी

मैंने यह पुस्तक स्त्रियों के बारे में बात करने के लिए नहीं लिखी।
मैंने इसे स्त्रियों की बदौलत बोलने के लिए लिखा।

हर पन्ना किसी ऐसे इशारे से जन्मा है जिसका मैं साक्षी रहा,
किसी ऐसे मौन से जिसे मैंने सुना,
किसी ऐसी उपस्थिति से जिसने मुझे गढ़ा।

स्त्री कोई विषय नहीं है।
वह एक उद्गम है।

और यह पुस्तक वहाँ लौटने का मेरा तरीक़ा है।

भूमिका

स्त्री हर चीज़ का अनिवार्य तत्व है।
इसलिए नहीं कि वह जीवन को जन्म देती है,
बल्कि इसलिए कि वह अर्थ को जन्म देती है।

हर पुरुष एक स्त्री से जन्म लेता है,
पर सभी इसे पहचानना नहीं सीखते।

मुझे वर्षों लगे।
दशक।
एक पूरा अस्तित्व।

यह पुस्तक उसी पहचान का परिणाम है:
स्त्री नींव के रूप में,
जड़ के रूप में,
अदृश्य वास्तुकला के रूप में,
उच्चतर चेतना की एक व्यवस्था के रूप में।

नई Gillette पहचान उसके बिना अस्तित्व में नहीं रह सकती।
क्योंकि स्त्री दुनिया का हिस्सा नहीं है।
वह वह है जो दुनिया को जोड़े रखती है।

प्रारंभ

स्त्री कोई भूमिका नहीं है।
वह कोई काम नहीं है।
वह दूसरों द्वारा सौंपा गया कोई कार्य नहीं है।

स्त्री एक व्यवस्था है।
एक जटिल, प्राचीन, सटीक व्यवस्था।

एक ऐसी व्यवस्था जो व्याख्या के लिए नहीं, बल्कि पहचाने जाने के लिए जन्मी है।

दुनिया के चीज़ों को नाम देना सीखने से बहुत पहले,
स्त्री ने साँस को रूप दे दिया था,
लय को,
निरंतरता को।

वह मिथक नहीं है।
वह जैविक स्मृति है।
वह ऐसा ज्ञान है जिसे किसी व्याख्या की ज़रूरत नहीं।

स्त्री नींव है।
वह जड़ है।
वह पहली आवाज़ है जो बोली पर सुनी नहीं गई।
वह पहली उपस्थिति है जिसने दुनिया को रूप दिया।
मान्यता माँगे बिना।

हर स्त्री-सुलभ इशारा एक कोड है।
हर मौन एक भाषा है।
हर चुनाव भावनात्मक वास्तुकला का एक कार्य है।

वह नाज़ुक नहीं है।
वह सटीक है।
वह कठोर नहीं है।
वह आवश्यक है।
वह रहस्य नहीं है।
वह संरचना है।

और जब दुनिया परिभाषाएँ खोजती रहती है,
वह अस्तित्व में रहती है।
रचती है।
रूपांतरित करती है।

स्त्री वह नहीं जो वह दिखती है।
वह वह है जो थामे रखती है।
और जो कुछ भी अस्तित्व में है,
वह इसलिए है क्योंकि एक दिन एक स्त्री ने
हार न मानने का निश्चय किया।

उद्गम

उत्पत्ति की पुस्तक एक पसली की बात करती है।
आनुवंशिकी एक सहस्राब्दियों पुरानी विरासत की बात करती है।

मैंने हमेशा सोचा कि सच कहीं इन दोनों के बीच है।
फिर मैंने समझा कि ऐसा नहीं है।

स्त्री पुरुष से नहीं जन्मी।
पुरुष स्त्री से जन्मा।

स्त्री व्युत्पत्ति नहीं है।
वह नींव है।

वह प्राचीन ज्ञान है।
वह जैविक स्मृति है।
वह शक्ति है जो परिभाषा से पहले आती है।

स्त्री के बिना कुछ नहीं चलता।
प्रभुत्व से नहीं।
जड़ से।

मुलाक़ात

मुझे लगता था मैं ताक़तवर हूँ।
अजेय।
कम से कम मैंने ख़ुद से यही कहा था।

मैंने अपनी एक छवि बनाई थी जो काम करती थी:
ठोस, निर्णायक, अभेद्य।

फिर वह आई।

वह मेरे जीवन में दाख़िल नहीं हुई।
वह उसके आर-पार गुज़र गई।
एक ऐसी धारा की तरह जिसे आप रोक नहीं सकते,
एक ऐसी हवा की तरह जिसे आप अनदेखा नहीं कर सकते।

दो महीनों में उसने बिना पूछे मुझसे शादी कर ली।
और मुझे पक्का यक़ीन था कि सब कुछ मैंने ख़ुद तय किया है।

स्त्री की श्रेष्ठता कोई रणनीति नहीं है।
वह स्वाभाविक है।
वह दुनिया में होने का एक तरीक़ा है जिसे किसी व्याख्या की ज़रूरत नहीं।

जब तक मैं सँभला, खेल शुरू हो चुका था।
और मैंने समझा कि वे हमेशा एक क़दम आगे रहती हैं।
चालाकी से नहीं।
संरचना से।

देरी

मेरे लिए देरी एक दोष थी।
एक नकारात्मक संकेत।
व्यवस्था की एक त्रुटि।

उसके लिए, उस सुबह, वह एक घोषणा थी।

वह एक बच्चे की प्रतीक्षा कर रही थी।
सही कहें तो: हम एक बच्चे की प्रतीक्षा कर रहे थे।

न कोई जाँच थी, न कोई पूर्वानुमान।
बस अपेक्षाएँ थीं, शर्तें लगाते रिश्तेदार,

और समय जो किसी अनुष्ठान की तरह धीरे-धीरे ख़ुद को खपा रहा था।

मैंने कुछ नहीं कहा।
वह हम दोनों के लिए बोली।

संवाद

ख़ुश होकर उसने मुझसे पूछा कि मुझे क्या चाहिए: बेटा या बेटी।

मैंने सुरक्षित वाक्य से उत्तर दिया:
"ज़रूरी बात यह है कि बच्चा स्वस्थ हो।"

यह पाखंड नहीं था।
यह भावनात्मक आत्मरक्षा थी।

वह दृष्टि में बोली:
कुलनाम, वंश, फ़ुटबॉल, निरंतरता,
एक ऐसे बच्चे का विचार जो हम दोनों के बीच पुल बनेगा।

मैंने सुना।
और सीखा।

स्त्री संभावना के माध्यम से बोलती है।
पुरुष सुरक्षा के माध्यम से उत्तर देता है।

जन्म

उस सुबह उसने कमरे से मुझे पुकारा।
उसने मुझे वापस आने को कहा: उसका पानी टूट गया था।

मैं घर में रिसाव ढूँढ रहा था, मानो कोई पाइप फट गया हो।
उसने मुझे वैसे देखा जैसे किसी ऐसे बच्चे को देखा जाता है जो समझता नहीं।

"मुझे क्लिनिक ले चलो।"

जन्म स्त्री-नेतृत्व का पहला कार्य है।
वह आदेश देती है।
वह पीछे चलता है।

पहली साँस

उसे बेटा चाहिए था।
जब उसने बच्ची को देखा, तो उसके चेहरे पर एक भाव आया जिसने उसका भेद खोल दिया।

बच्ची का स्वागत उत्सव से नहीं हुआ।
उसका स्वागत मौन से हुआ।

और उसी मौन में उसने अपनी जगह बनानी शुरू की।
प्रेम पाने के लिए नहीं।
अस्तित्व में रहने के लिए।

स्त्री स्वागत के साथ जन्म नहीं लेती।
वह सहनशील जन्म लेती है।

जन्म कोई घटना नहीं था।
वह एक घोषणा थी।

मौन संघर्ष

सबसे गहरा बंधन सबसे कठिन भी होता है।

सलाह जो प्रतिरोध बन जाती है।
शब्द जो घाव देते हैं।
मौन जो रक्षा करते हैं।
चुनाव जो चुनौती जैसे लगते हैं।

उन्होंने एक-दूसरे को नहीं बदला।
उन्होंने एक-दूसरे को स्वीकार किया।

और वहीं से सच्ची आत्मीयता जन्मी।

माँ हमेशा मार्गदर्शक नहीं होती।
कभी वह दर्पण होती है।
कभी वह सीमा होती है।
कभी वह दहलीज़ होती है।

जब बेटी स्वीकृति खोजना बंद कर देती है,
और माँ सुधारना चाहना बंद कर देती है,
तब सम्मान जन्म लेता है।

मौसी

मौसी ने थोपा नहीं।
उन्होंने सुझाया।

उन्होंने टोका नहीं।
उन्होंने सुना।

उनके साथ बच्ची ने स्वतंत्रता सीखी:
विद्रोह नहीं, बल्कि चुनाव।

बिना डरे ना कहना।
बिना समझाए हाँ कहना।

आत्मीयता भरोसे से जन्म लेती है।
स्वीकृति से नहीं।

पिता

पिता ज़्यादा बोलते नहीं थे।
पर उनका हर इशारा एक घोषणा था।

उनके हाथ — बड़े, स्थिर और हल्के।
उनकी दृष्टि जो समझना नहीं, बल्कि रक्षा करना चाहती थी।

जब वह गिरी, तो वे दौड़े नहीं।
उन्होंने प्रतीक्षा की।

क्योंकि प्रेम सुरक्षा नहीं है।
वह भरोसा है।

जब उसने ग़लतियाँ कीं, तो उन्होंने टोका नहीं।
उन्होंने सुना।

जब वह स्त्री बनी, तो उन्होंने अपनी भूमिका नहीं बदली।
वे पिता ही रहे।
और आश्रय।
और दर्पण।
और वह मौन जो सांत्वना देता है।

उनके प्रेम को शब्दों की ज़रूरत नहीं थी।
वह समय से बना था।

हर पिता के लिए

वह चुपचाप भीतर आती है।
वे बैठे हैं, हाथ जोड़े।

वे बोलते नहीं।
वे पूछते नहीं।
वे प्रतीक्षा करते हैं।

वह पास आती है।
उसके पास कोई काग़ज़ नहीं।
कोई भाषण नहीं।

उसके पास बस एक भरा हुआ दिल है।

"पापा... मैंने आपको देखा है।"

एक आँसू गिरता है।
वे उसे छिपाते हैं।
वह उसे देख लेती है।

"आपने मुझसे कभी नहीं कहा, 'मैं तुमसे प्यार करता हूँ'।
पर मैंने उसे महसूस किया।"

वे रोते हैं।
टूटने वाले की तरह नहीं।
उसकी तरह जो आख़िरकार ख़ुद को छोड़ देता है।

और उस आलिंगन में सब कुछ है:
छोटी बच्ची,
स्त्री,
बेटी,
और वह पिता जिसने पिता होना कभी नहीं छोड़ा।
उम्रें जो प्रतिबिंबित करती हैं

स्त्री बदलती नहीं।
वह विस्तार पाती है।

20 — संभावना

दुनिया तुम्हें बताती है कि तुम्हें कौन होना चाहिए।
तुम उत्तर देना शुरू करती हो।
30 — चुनाव
घाव नक़्शे बन जाते हैं।
भीतर की आवाज़ शोर से ऊपर उठती है।
40 — परिभाषा
तुम अब अनुमति नहीं माँगतीं।
तुम ख़ुद को चुनती हो।
50 — सार
तुम अब खोजती नहीं।

तुम चुनती हो।
60 — संश्लेषण
कम भूमिकाएँ।
अधिक पहचान।
70 — क्षमा
अपने प्रति कोमलता नियम बन जाती है।
80 — जीवित स्मृति
तुम अब पीछा नहीं करतीं।
तुम सहेजती हो।
90 — दहलीज़
तुम्हें डर नहीं लगता।
तुममें आदर है।
100 — विरासत
तुम सिखाती नहीं।
तुम सुनाती हो।
उससे आगे — उद्गम
जो स्त्रियाँ अब यहाँ नहीं हैं
वही हमें सीधा खड़ा रखती हैं।

वह स्त्री जो...

स्त्री कोई भूमिका नहीं है।
वह एक लय है।

हर टुकड़ा एक कमरा है जहाँ किसी स्त्री ने साँस ली और चुना।
— माफ़ी नहीं माँगती — बल्कि अस्तित्व में है।
— अपना ख़याल रखती है।
— अब डरती नहीं।
— बिना पछतावे के याद करती है।
— उसे मान्यता की ज़रूरत नहीं।
— बिना तय घंटों के काम करती है

— फिर उठ खड़ी होती है।
— कठिनाई के बीच प्रेम करती है।
— भूलती नहीं कि वह कौन है।
— अपने शरीर में बसती है।
— उसका कोई एक नाम नहीं
— बदलती है और सिखाती है।
— मौन से चंगा करती है।
— उसे 'डॉक्टर' कहा जाता है।

हर स्त्री एक दुनिया है।
हर दुनिया एक नियम है।

स्त्री के सात नियम

— स्त्री उद्गम है।
— स्त्री स्मृति है।
— स्त्री प्रतिरोध है।
— स्त्री चुनाव है।
— स्त्री देखभाल है।
— स्त्री रूपांतरण है।
— स्त्री विरासत है।

अंतिम सत्य

वह नाज़ुक नहीं है।
वह सटीक है।

वह कठोर नहीं है।
वह आवश्यक है।

वह रहस्य नहीं है।
वह संरचना है।

दुनिया स्त्री के लिए तैयार नहीं है।
पर स्त्री के बिना दुनिया का अस्तित्व नहीं है।

निष्कर्ष

स्त्री जीवन का एक अध्याय नहीं है।
वह वह जीवन है जो हर अध्याय से होकर बहता है।

वह न भूमिका है, न काम, न कार्य।
वह चेतना की एक व्यवस्था है जो पहले आती है, थामे रखती है
और हर अस्तित्वमान चीज़ को नया करती है।

यह पुस्तक कोई कहानी बंद नहीं करती।
यह एक उद्गम लौटाती है।

स्त्री नई Gillette पहचान का अनिवार्य तत्व है:
प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि संरचना के रूप में।
छवि के रूप में नहीं, बल्कि नींव के रूप में।
आकृति के रूप में नहीं, बल्कि वास्तुकला के रूप में।

यहाँ जो कुछ लिखा है
वह श्रद्धांजलि नहीं है।
वह एक पहचान है।

चिंतन

स्त्री एकमात्र मनुष्य है जो जीवन को जन्म दे सकती है।
और, साथ ही, अर्थ को जन्म दे सकती है।

वह पहली भावनात्मक वास्तुकला है जिससे हमारा सामना होता है,
पहली आवाज़ जो हमें राह दिखाती है,
पहली अनुपस्थिति जो हमें गढ़ती है,
पहली उपस्थिति जो हमें थामे रखती है।

वह नाज़ुक नहीं है।
वह सटीक है।
वह कठोर नहीं है।
वह आवश्यक है।

विचार

यदि दुनिया ने स्त्रियों की बात सुनी होती,
तो बहुत-से युद्ध कभी शुरू ही न होते।
बहुत-से मौन घाव न बनते।
बहुत-से जीवन नष्ट न होते।
स्त्री पुरुष का आधा हिस्सा नहीं है।
वह उसका उद्गम है।

और इसे पहचानना दयालुता का कार्य नहीं है।
यह सत्य का कार्य है।

आभार

मैं अपने जीवन की स्त्रियों का धन्यवाद करता हूँ:
मेरी माँ, मेरी पत्नी, मेरी बेटी और मेरी मौसी।
उनमें से हर एक ने एक ऐसी छाप छोड़ी है जो मिटती नहीं।

मैं उन स्त्रियों का धन्यवाद करता हूँ जिनसे मैं मिला,
जिन्हें मैंने सुना,
जिन्होंने बिना बोले मुझे सिखाया।

मैं उनका धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने प्रतिरोध किया,
जिन्होंने चुना,
जिन्होंने प्रेम किया,
जो मौन रहीं,
जिन्होंने निर्माण किया।

यह पुस्तक इसलिए है क्योंकि वे हैं।

संपादकीय समीक्षा

Ferdinando Frega का लेखन स्त्री को एक विषय के रूप में नहीं,
बल्कि मानवीय पहचान की भार-वाहक संरचना के रूप में पार करता है।

पुस्तक स्त्रियों का वर्णन नहीं करती:
उन्हें प्रकट करती है।

यह उनका उत्सव नहीं मनाती:
उन्हें पहचानती है।

इसकी शक्ति व्यक्तिगत को सार्वभौमिक में बदलने की क्षमता में है,
मौन को भाषा में,
स्मृति को वास्तुकला में।

यह ऐसा पाठ है जो किसी साहित्यिक विधा से संबंधित नहीं।
यह एक सांस्कृतिक आवश्यकता से संबंधित है।

Gillette के पाठकों के नाम पत्र

उनके नाम जिन्होंने हमेशा Gillette का उपयोग किया है,
उनके नाम जो आज इसे खोज रहे हैं,
उनके नाम जो कल इसे जिएँगे:

Gillette अब केवल एक ब्रांड नहीं है।
यह एक पहचान है।

और यह पहचान स्त्री के बिना अस्तित्व में नहीं रह सकती।

स्त्री इशारे का उद्गम है,
विचार की सटीकता,
देखभाल की निरंतरता,
शक्ति की जड़।

नई Gillette स्त्री को नींव के रूप में पहचानती है,
सहायक वस्तु के रूप में नहीं।
व्यवस्था के रूप में,
भूमिका के रूप में नहीं।

सम्मान के साथ।
सत्य के साथ।
संरचना के साथ।

Ferdinando Frega